

उत्तराखंड में हिमालय की गर्मी से बनेगी बजिली

चर्चा में क्यों?

17 जुलाई, 2023 को मीडिया से मली जानकारी के अनुसार उत्तराखंड में हिमालय की गर्मी से जल्द ही बजिली उत्पादन होगा। इसके लिये पहली बार भू-तापीय ऊर्जा (जियोथर्मल एनर्जी) से बजिली उत्पादन पर काम शुरू किया जाएगा।

प्रमुख बिंदु

- हिमालय की गर्मी से बजिली बनाने के लिये राज्य सरकार व ऑयल एंड नेचुरल गैस कॉरपोरेशन लिमिटेड (ओएनजीसी) जल्द ही एमओयू साइन करेंगे। जल्द ही ओएनजीसी, जियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया और आइसलैंड जियो सर्वे के विशेषज्ञों की टीम प्रदेश में अलग-अलग जगहों पर जियोथर्मल एनर्जी की संभावनाएँ तलाश करने आएगी।
- ज्ञातव्य है कि उत्तराखंड के हिमालयी क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर भू-तापीय ऊर्जा होने की संभावना है। पूर्व के अध्ययनों में भी ये बात सामने आ चुकी है।
- गौरतलब है कि पिछले महीने ओएनजीसी ने लद्दाख में भू-तापीय ऊर्जा प्रोजेक्ट स्थापित करने के लिये आइसलैंड जियो सर्वे नामक वैज्ञानिक व शोध संस्था के साथ एमओयू साइन किया है।
- इस दौरान ओएनजीसी की नदिशक (वसितार) सुषमा रावत ने इसे ऊर्जा ज़रूरतें पूरी करने का एक अच्छा उपाय मानते हुए कहा कि हेतु देश के अन्य राज्यों में इसकी संभावनाएँ देखी जाएंगी। इसी क्रम में, उत्तराखंड सरकार अब ओएनजीसी के साथ मलिकर राज्य में जियो थर्मल एनर्जी पर काम शुरू करने जा रही है।
- वदिति है कि वर्ष 2008 में गढ़वाल विश्वविद्यालय के प्रो. कैलाश भारद्वाज और प्रो. एससी तिवारी का एक शोधपत्र प्रकाशित हुआ था। इसमें उत्तराखंड के पर्वतीय क्षेत्रों में जियो थर्मल ऊर्जा की अपार संभावनाएँ जताई गई थीं।
- उन्होंने अपने शोध में बताया था कि हिमालय के गर्भ में 121 से 371 डग्री सेल्सियस तक ऊर्जा छुपी हुई है, जिसका उपयोग बजिली उत्पादन में किया जा सकता है।
- उन्होंने शोध में तपोवन जियोथर्मल स्प्रिंग के निकट धौलीगंगा के तीन किलोमीटर अपस्ट्रीम एरिया तीन डरलि का जिकिर किया है, जहाँ से 65-90 डग्री सेल्सियस तापमान के गर्म पानी के चश्मे निकल रहे थे। यमुनोतरी के निकट भी एक जियोथर्मल स्प्रिंग से 88-90 डग्री सेल्सियस गर्म पानी निकलता पाया गया था।
- वैज्ञानिकों का कहना था कि बदरीनाथ, गौरीकुंड और तपोवन के जियोथर्मल क्षेत्रों को विकसित किया जा सकता है।
- वाडिया हिमालय भूवर्ज्ञान संस्थान ने वर्ष 2020 में हिमाचल और उत्तराखंड में जियोथर्मल स्प्रिंग पर बड़ा अध्ययन किया था वाडिया के नदिशक कालाचंद साई ने बताया था कि किस तरह से उत्तराखंड में 40 और हिमाचल प्रदेश में 35 गर्म पानी के चश्मे चहिनति किये गए हैं, जो कि भवषिय में ऊर्जा उत्पादन की दृष्टि से काफी कारगर साबित हो सकते हैं।
- उल्लेखनीय है कि प्रदेश में जल वदियुत परियोजनाएँ लंबे समय से लटकी हैं। अब राज्य सरकार इसके विकल्पों पर काम कर रही है ताकि भवषिय में राज्य में बजिली ज़रूरतों के हिसाब से उत्पादन किया जा सके।
- राज्य सरकार ओडशा में कोयले से बजिली उत्पादन करेगी। इसके लिये यूजेवीएनएल-टीएचडीसी का संयुक्त उपकरण बनाया जा रहा है। दूसरी ओर, बारशि के पानी से बजिली के लिये राज्य में पंप स्टोरेज पॉलिसी बनाई जा रही है। जदिल समूह ने प्रदेश में चार ज़िलों देहरादून, नैनीताल, अल्मोड़ा और चंपावत में इसके लिये सर्वेक्षण पूरा कर लिया है।
- भू-तापीय ऊर्जा से देश में 10,600 मेगावाट बजिली उत्पादन की संभावनाएँ 15 साल पहले आँकी गई थीं। केन्या में 129 मेगावाट, इथोपिया में सात मेगावाट, पापुआ न्यू गिनी में 56 मेगावाट के प्रोजेक्ट को इसके उदाहरण के तौर पर देखा जा सकता है। अमेरिका (3676 मेगावाट) सहित दुनिया के 20 देश आज जियोथर्मल एनर्जी से बजिली उत्पादन कर रहे हैं।
- ऐसे बनती है भू-तापीय ऊर्जा से बजिली: जियोथर्मल एरिया में डरलि किया जाता है। यहाँ गर्म पानी के चश्मे की भाप से टरबाइन चलाकर बजिली उत्पादन होता है। इस भाप से बनने वाला पानी दोबारा ज़मीन के भीतर ही डरलि करके भेज दिया जाता है।
- वर्तमान में उत्तराखंड जल वदियुत नगिम (यूजेवीएन) के तहत 1396.1 मेगावाट की जल वदियुत परियोजनाएँ चल रही हैं। 440.5 मेगावाट की जल वदियुत परियोजनाओं पर नरिमाण कार्य चल रहा है। इसके अलावा, सौर ऊर्जा के करीब 60 प्रोजेक्ट चल रहे हैं। इसके सापेक्ष बजिली की मांग कई गुना अधिक है।

Exclusive: उत्तराखंड में हिमालय की गर्मी से बनेगी बिजली, पहली बार जियो थर्मल एनर्जी पर काम शुरू

//

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/himalayan-thermal-energy-will-generate-electricity-in-uttarakhand>

